भारतीय पारंपरिक ज्ञान पत्रिका
खंड 25(9), सितम्बर 2026, पृ. 870-880
DOI: 10.56042/ijtk.v25i9.26128

पूर्वीघाट, भारत के पार्वतीपुरम मान्यम जिले के जनजातीय समुदायों में त्वचा संबंधी विकारों के उपचार हेतु पादप-आधारित चिकित्सा पर नृवनस्पति शास्त्रीय अंतर्दृष्टि

जनार्दन राव वल्लुरु*, पी कैडिंग रत्न कुमार एवं संध्या श्री बोनेला
वनस्पति विज्ञान विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम 530 003, आंध्र प्रदेश, भारत।
*ई-मेल: janrdhanvaro@gmail.com

प्राप्त 15 जनवरी 2026; संशोधित 06 अगस्त 2026; स्वीकृत 18 सितम्बर 2026

पूर्वी घाट के जनजातीय समुदायों में त्वचा संबंधी विकार सामान्य रूप से पाए जाते हैं, जहाँ औषधीय पौधे प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में अभी भी उपयोग किए जाते हैं। इस अध्ययन में आंध्र प्रदेश के पार्वतीपुरम मान्यम जिले में त्वचा संबंधी विकारों के उपचार के लिए उपयोग किए जाने वाले औषधीय पौधों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण एवं मूल्यांकन किया गया है। यह क्षेत्र जैविक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है तथा यहाँ त्वचा संबंधी पारंपरिक चिकित्सा का दस्तावेजीकरण अपेक्षाकृत सीमित है। अर्द्ध-संरचित साक्षात्कारों तथा निर्देशित क्षेत्रीय सर्वेक्षणों के माध्यम से नौ जनजातीय समुदायों का प्रतिनिधित्व करने वाले 86 सूचनादाताओं सेनृवनस्पति शास्त्रीय जानकारी एकत्र की गई। त्वचा संबंधी 41 श्रेणियों के विकारों के उपचार के लिए 96 वंशों तथा 49 कुलों से संबंधित कुल 102 औषधीय पादप प्रजातियाँ दर्ज की गईं। शाकीय पौधे प्रमुख वृद्धि-रूप रहे, पत्तियाँ सर्वाधिक उपयोग किया जाने वाला पादप भाग थीं तथा लेप प्रमुख तैयारी विधि थी, जो बाह्य/स्थानीय अनुप्रयोग की प्राथमिकता को दर्शाती है। मात्रात्मक नृवनस्पति शास्त्रीय विश्लेषण से सूचनादाताओं के बीच उच्चस्तर की सहमति प्राप्त हुई, जिसमें सूचनादाता सहमति कारक (Informant Consensus Factor; ICF) के मान 0.98 से 1.00 तक रहे। *Aristolochia bracteolata, Semecarpus anacardium, Byttneria herbacea, Getonia floribunda* तथा *Cycas circinalis* जैसी प्रजातियों में उच्च उपयोगमूल्य (Use Value; UV) तथा निष्ठास्तर (Fidelity Level; FL) दर्ज किया गया, जो उनके सांस्कृतिक महत्व तथा व्यापक चिकित्सीय उपयोग को दर्शाता है। यह अध्ययन त्वचा संबंधी विकारों के प्रबंधन के लिए स्थानीय/स्वदेशी ज्ञान की समृद्धि को रेखांकित करता है तथा बदलती सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं के कारण इस पारंपरिक ज्ञान के क्रमिक ह्रास पर भी बल देता है। ये निष्कर्ष भविष्य के फाइटोकेमिकल एवं औषधीय-वैज्ञानिक अनुसंधानों के लिए एक उपयोगी आधार प्रदान करते हैं तथा औषधीय पौधों और उनसे संबंधित जनजातीय पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण का समर्थन करते हैं।

मुख्य शब्द: मदपीठा, रोही, सेपा, सोनोवाल कछारी, पारंपरिक किण्वित पेय